ISSN 2395-0315

AOJ

(Arts Oriented Journal)

(Multi - Lingual Bi- Annual)

Special Issue for

International Interdisciplinary Conference Of Music,Recreation and Philosophy

ON

Role of Recreational Activities and Music for the Wellbeing of Society

During 9-10 March 2015

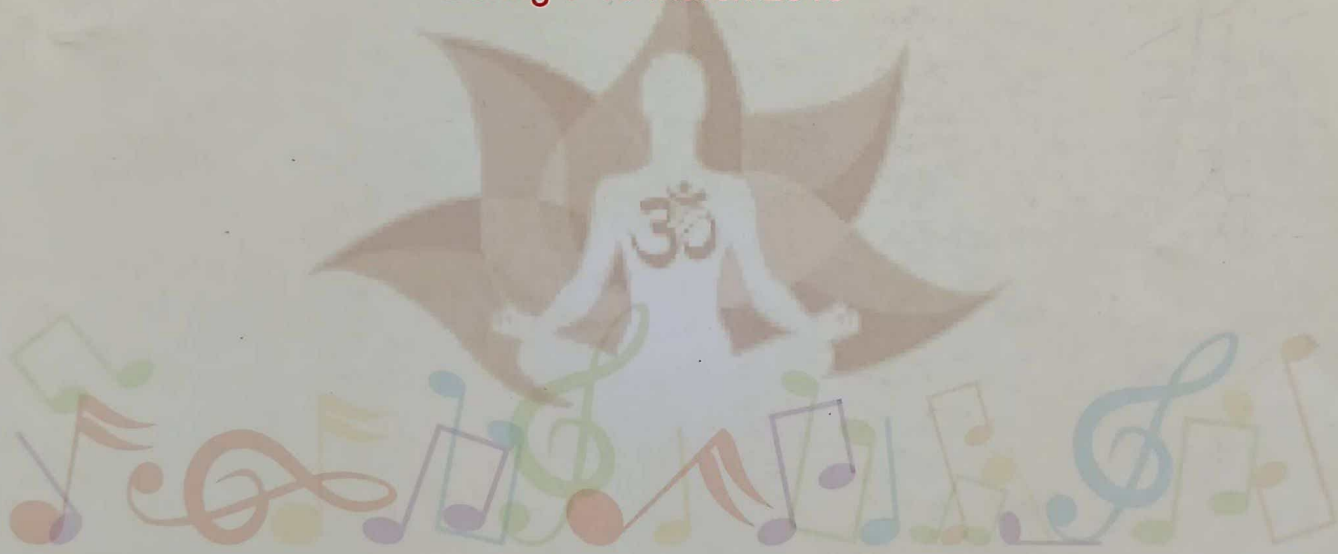

Jointly Organized by

MAHATMA JYOTIBA FULE MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI

In Collaboration With

WREA INDIA CHAPTER

AND

Department Of Physical Education

Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. Maharashtra-INDIA

ISSN 2395-0315

AOJ

ARTS ORIENTED JOURNAL

(Multi-lingual Bi-Annual)

Editor

Dr. Santoshrao Thakre

Principal, Mahatma Jyotiba Fule College,

Amravati. (M. S.) India. 444607

Publisher

Research Center for Humanities

Mahatma Jyotiba Fule College, Amravati. (M.S.) India. 444607

Printer

Raju Padar,

Mahatma Jyotiba Fule College, Amravati. (M.S.) India. 444607

Printed at

Recho Resograph Machine,

College Office, Amravati, (M.S) India. 444607

Cover Page

Sudip Jawarkar

Vaishnavi Printers, Amravati

Edition

Special Issue for

International Interdisciplinary Conference of Music, Recreation and Philosophy.

Price

Rs. 200/-

136 संगीत और मानसिक स्वास्थ्य	राजेश चन्द्र जोशी	306
137 भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्राणायाम का महत्त्व	प्रा. प्रज्ञा द. मेश्राम	308
138 योग तथा संगीत एक विवेचन	प्रा. डॉ. पुर्णिमा दिवसे	309
139 भारतीय संगीत और मानसिक स्वास्थ	प्रा. योगिनी बी. सोनटक्के	311
140 संगीत का दार्शनिक आधार और मनोरंजनात्मक क्रिया	कु. रसिका प्र. करंडे	312
141 मानसिक स्वास्थ्य मे संगीत चिकीत्सा	गजानन ना. केतकर,	314
142 भारतीय संगीत एवं मानसिक स्वास्थ्य	प्रा.विद्या गावंडे	315
143 संगीत : एक मोक्ष प्राप्ती का मार्ग !	अतुल रं. भातकुलकर	316
144 मानसिक स्वास्थ्म के लिए संगीत	प्रा. सुनील भि. कोल्हे	319
145 मानसिक स्वास्थ्य के लिये संगीत	डॉ. रीता दास	321
146 मानसिक स्वास्थ की कुँजी संगीत	डॉ. सुवर्णा तावसे	322
147 स्वास्थ्य जीवन के लिए योग का महत्त्व	हाडुळे धनराज सुभाष	323
148 व्यायाम, नृत्य तथा योग क्रिया करने वाले छत्रों के चर्बी प्रमाण.....	प्रा. गजानन एस. पैयकट	325
149 प्राणायाम का हृदय श्वसन क्षमता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन	प्रा. प्रशांत एस. चर्जन	328
150 नृत्य के कारण बंजारा समाज की तंदुरुस्ती	प्रा. पि.के. इंगोले	330
151 मनोरंजन क्रियाओं का अर्थ व प्रकार	डॉ.गुरूदास आ. लोकरे	331
152 आधुनिक समाज मे मनोरंजन क्रियाओं का महत्व	डॉ.मिनानाथ शि..गोमचाले	333
153 तंदुरुस्ती के लिये नृत्य का महत्व	प्रा. अनिल एम. काळे	335
154 सामाजिक अकृष्टि के परिप्रेक्ष्य में संगीत और उससे संलग्न...	निर्झरी हरीशभाई देसाई	337
155 तणावरहित जीवन का मार्ग : योग	प्रा. पुरुषोत्तम शं. वानखेडे	339
156 नृत्य संकल्पना का तात्त्विक विवेचन	डॉ. वेदप्रकाश ई. डोणगांवकर	340
157 नशा मुक्ती के लिए दार्शनिक तत्त्वों की आवश्यक्ता	श्री. विजय वसंतराव मोरे	342
158 स्वास्थ्य जीवन के लिए योग का महत्त्व	हाडुळे धनराज सुभाष	344
159 दर्शनशास्त्रं में संगीत	प्रा. मोनालिसा अ. खानोरकर	346
160 सामाजिक समाधान का आधार – दर्शनशास्त्र	कु. रजनी आ. काळे	347
161 अरस्तु का चिंतन	डॉ. सुनिल काळमेघ	348
162 मानसिक स्वास्थासाठी संगीत	शिवराज शिंदे	349
163 मानसिक स्वास्थ्म के लिए संगीत की भूमिका	डॉ मनिषा व्हि कुलकर्णी	350

नृत्य संकल्पना का तात्त्विक विवेचन

डॉ. वेदप्रकाश ई. डोणगांवकर
एम.एस.गोटे महाविद्यालय, वाशिम

दर्शनशास्त्र एक व्यापक क्षेत्र है । जीसके आंतर्गत अनेको शास्त्रोका विचार अभिप्रेत है । उन सभी शास्त्रो में से एक शास्त्र सौंदर्यशास्त्र है । सौंदर्यशास्त्र एक आदर्शवादी शास्त्र है । जीसमें मक्या है ?फके बजाय मकैसे हो?फपर बल दिया जाता है । इस संदर्भ में विचार करते समय सौंदर्यशास्त्र तात्त्विक चिकित्सा और विश्लेषण कि पद्धती को आपणाता है । सामान्यत: सौंदर्य शास्त्र में कला, कला कि रचणा, कला का स्वाद, कला निर्माण के प्रक्रिया के घटक, विराटता, सुंदरता आदी के संदर्भ से विचार किया गया है ।

सौंदर्य शास्त्र में कला के संदर्भ से मनृत्य (ऊ्रपलश)फका विचार किया गया है । वास्तव में कला मनुष्य भावनाओंके अभिव्यक्ती का माध्यम है । इस कला के अंतर्गत चित्र, आकृती, मुर्ती, संगित, नृत्य, नाट्य, काव्य, साहीत्य इत्यादी कि रचणा भावनाओं के अभिव्यक्ती के लिए कि जाती है । मनुष्य में भावनाओं का अस्तित्व यह एक प्राकृतिक घटना है । परंतू मनुष्य व्दारा भावनाओंको अभिव्यक्त करना कृत्रिम है । वास्तव में वह कृत्रिम है या नही यह एक विवादात्मक विषय ही है । क्यो की स्पेन्सर के मतानुसार, कला मुनष्य कि अनुकरण प्रक्रिया से निर्माण होती है ।[1] अर्थात स्पेन्सर कृत्रिमता का पुरस्कार करते है । मगर ओशो नृत्य के संदर्भ में प्राकृतिकता का पुरस्कार करते दिखाई पडते है ।

अशो का मानना है कि, जीस प्रकार नदी नृत्य करते हुये सागर कि और बढते रहती है और अंतिम मिलन के समय नृत्य का तांडव करते हुये सागर मे समा जाने का आनंद प्राप्त करती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी नृत्य कि तरह कर्म करते हुये अपने साध्य मे समाजाने का आनंद प्राप्त करना चाहिए।[2] यहा ओशो प्रकृती के पदार्थ के रुप में नदी और मनुष्य दोनो को एक समान मानते है । अर्थात वे नदी की तरह मनुष्य में भी नृत्य को प्राकृतिक रुप से देखते है । यहा स्पेन्सर और ओशो कि भुमिकाओंसे नृत्य के संदर्भ में सत्ताशास्त्रीय प्रश्न उपस्थित होता है कि, मुनष्य जीवन में नृत्य का स्थान कृत्रिम है या प्राकृतीक ? किंतू इन दोनो के संयुक्त विचारसे यह स्पष्ट होता है कि, नृत्य आनंद को प्राप्त करने का माध्यम है । जीसके लिए कुछ विषय अनुकरनीय है । और एक अर्थ से यह अनुकरन से आनंद तक कि क्रिया (नृत्यकला) मनुष्य अस्तित्व का परिचय है।

मनुष्य अस्तित्व का (नृत्यकला) परिचय दो अर्थो मे दिया जा सकता है । एक व्यावहारीक और दुसरा पारमार्थीक । व्यावहारीक अर्थ से नृत्य सुख (गे्) का साधन है । नृत्य शरिर और मन का व्यायाम है। तो परमार्थीक अर्थ से यही नृत्य आनंद को प्राप्त करने का माध्यम (उहरपपशश्र) और आंनद को प्रदान (send out) करने का साधन (Tool) है । तात्पर्य व्यापक अर्थ से नृत्य, भावनाओ को व्यक्त करने का, सुख और आनंद (Happiness) दोनो को प्राप्त करने का, शरिर और मन को उर्जा से प्रफुल्लीत करने का कार्य करता है । अब यहा एक एक कर हम इन कार्योको समजने का प्रयास करेंगे ।

टॉलस्टॉय के अनुसार कला भावनाओंकी भाषा है ।[3] अर्थात नृत्य भी कला होने के नाते भावनाओं को व्यक्त करने का कार्य करता है । भावनाए अनेक प्रकार कि है । जैसे प्रसन्नता युक्त, दु:ख युक्त, व्देषयुक्त और क्रोध युक्त इत्यादी । वास्तव रुप में यह सभी प्रकार कि भावनाए मभावफके साधनमुल्य है । तात्पर्य से नृत्य भावनाओं के माध्यमसे भाव को ही प्रदर्शित करता है । और यही उसका प्रमुख कार्य है । अरस्तूने (Aristotal) भाव और नृत्य के संबंध को एक विशेष महत्व दिया है । उसने भाव को द्रव्य (matter) माना है और यह भाव जीस रुप में व्यक्त किया जात है उसे वह आकार (form) मानता है ।[4] अर्थात आरस्तू नृत्य को (कला को) आकार मानता है । यदी हम आरस्तू के द्रव्य और आकार के सिध्दांत को समझते है, तो यह स्पष्ट है कि, भाव नृत्य का अनिवार्य साधन होते हुये साध्य है । क्यो कि भाव के अभाव में नृत्य कि कल्पना भी अर्थहिन है । क्यो कि भाव नकेवल मनुष्य अस्तित्व का परिचय है, बल्की अस्तित्व को गती प्रदान करनेवाली (Motivetionebal) उर्जा है और इस उर्जा का अनुभव नृत्य से है । तात्पर्य मवास्तव अस्तित्वफको स्पष्ट करना नृत्य का कार्य (function) है । किंतू यहा सवाल उपस्थित हो जाता कि, भावनाओं को अभिव्यक्त करना यही एकमात्र नृत्य का कार्य है क्या ? नही ! नृत्य इससे भी अधिक कार्योका माध्यम और साधन भी है। क्योकी जॉन लॉक कहते है, "The effect of dancing....give to children....not mere outward grace-fulness of motion, but manly thoughts and becoming confidence"5 अर्थात नृत्य का परिणाम बच्चों को (नृतक को) ना केवल बाह्य सुंदरताकी गती देता है । बल्की मजबूत सोच और योग्य विश्वास भी देता है । निश्चीत रुपसे लॉक का यह मत नृत्य का एक नया कार्य दर्शाता है । लॉकने आपने इस विधान में मजबूत सोच और योग्य विश्वास इन शब्दोपर बल दिया है । यदी हम इन शब्दों के अर्थ से उसके मुल्य में जानेका प्रयास करेंगे तो वहा हम क्रमानुरुप उचीत भाव और आत्मज्ञान के प्रत्यय को पायेंगे । तात्पर्य नृत्य नाकेवल भावना बल्की भाव और आत्मज्ञान को उजागर (manifest) करने का कार्य भी करता है । इस संदर्भ में ओशो कि माने तो, जब हम नृत्य करते है तब अन्य लोग हमारे बाह्यांग को, उसकी गती को, लय, पद, नृत्य आदी को देखते है । परंतू हम स्वंयम् नृतक के रुपमें आपने ही बाह्य और आंतरिक शरिर (स्थिर केंद्र) को देख पाते है ।[6] निश्चीत रुप से ओशो कि यह सोच आत्मज्ञान को ही दर्शाती है ।

भावनाओं के माध्यम से भाव कि अभिव्यक्ती, मजबूत सोच और

आत्मज्ञान के साथ साथ सुख और आनंद, ज्ञान और दर्शन को भी प्रदर्शित करने का कार्य नृत्य करता है। आमतौर पर हम किसी बारात या रेली में लोगो को नाचते हुये देखते है। निश्चित रुप से वे नाचने वाले लोग किसीना किसी भावनासे प्रेरित होकर ही नाचते है। पर सवाल यह है कि, इस नाचका वाकई में कोई मूल्य और महत्व है ? कुछ लोगो का मानना है कि, हाँ ! इस नाच का भी मूल्य और महत्व है। ऐसे नृत्य हमारे शरिर में कंपण लाता है, यह हमारे शरिर को व्यायाम देता है। यह हमारा मनोरंजन करवाते है। अंतत: यह नृत्य हमको सुख (Joy) का अनुभव देते है। निश्चित रुप से हम इस सोच, इस दृष्टीकोण को नकार नही सकते। परंतू हम इस बात को भी नकार नही सकते कि, इस प्रकार के नृत्य कि एक मर्यादा है। इस प्रकार के नृत्य केवल हमे भौतिक और क्षणिक सुख का अनुभव करते है। इनसे किसी प्रकारका ज्ञान और दर्शन उभरकर नही आता। जो हमे आनंदा (Happiness) का अनुभव कराये।

क्या वाकई में ऐसा कोई नृत्य है, जो भावनाओंको व्यक्त करते हुये दर्शको के भाव में परिवर्तन ला सके ? जो स्वंयम् कलाकार और दर्शको को सुखद मुद्राओ के माध्यम से आनंद का और दु:खद मुद्राओंके माध्यमसे करुणा के भाव का अनुभव दे सके। जो मनोरंजन के हेतू से मूल्य, संस्कृती, सभ्यता, परंपरा का परिचय करवा सके ? ज्ञान के माध्यम से दर्शन को नए आयाम दे सके ? हाँ ! यदी हम भारतीय शास्त्रीय नृत्यो (Indian Classical Dance) और भारतीय पारंपारीक नृत्यो कि और आपना ध्यान केंद्रीत करेंगे तो हमे शायद उपरोक्त सभी प्रश्नो के उत्तर मील सकते है। उस संदर्भ मे विशादर और अलंकार से सम्मनित हुयी श्रीमती सुप्रवा मिश्राने आपने आलेख 'The role of indian classical dance in education'[7] मे कुछ महत्वपूर्ण बाते बताई है। जीसको यहा संक्षिप्त रुप में दर्शाया है।

1) यह नृत्य शरिर और मन के कंपन का आकार (form) है।

2) यह नृत्य योगा का आकार (form) है।

3) दंतकथा और पुराण इस नृत्य के आधार है। (यह इसका ज्ञानात्मक अंग है।)

4) यह नृत्य कला का उच्चतम आकार (form) है। (इस प्रकार के आकार कि शिक्षा संभाव है।)

5) इस प्रकार के नृत्य की शिक्षा (Education) से सुसंकृत नागरिक का निर्माण होता है।

निश्चित रुप से सुप्रवा मिश्राने भारतीय शास्त्रीय नृत्य कि जीन विशेषताओं को अपने आलेख में अधोरेखीत किया है, वह आपने आप में भारतीय दर्शन के बिंदुओं का सार है। और व्यापक अर्थ से कहा जाए तो यह विशषताए दर्शन का मव्यावहारीक अंगफस्पष्ट करते है। या फिर हम ऐसा भी कह सकते है कि, "This is the part of the 'practical philosophy.""

निष्कर्ष : चेतन युक्त शरिर मुनष्य का विशेष गुण है। ऐसे इस चेतना को उर्जा के रुप मे कार्यान्वित करने का कार्य मनृत्यफकरता है। वैसे तो सत्ता के रुप में नृत्य का स्वतंत्र रुप से काई स्थान नही है। फिर भी ओशो की दृष्टी से नृत्य मनुष्य के कार्य के रुप में अस्तित्ववान है। अर्थात नृत्य मनुष्य का स्वभाव है, मनुष्य का परिचय है।

नृत्य के अर्थात मनुष्य के विविध कार्य है। जिसमें मुद्राओंके माध्यम से भाव को प्रकट करना, भाव के माध्यम से दर्शनकी स्थापना करना, दर्शन (सुसंगत विचार) और उसकी अभिव्यक्ती के माध्यम से शुभ की स्थापना करना आदी कार्यो का प्रमुख स्थान है। जीसके लिए मुद्रक अर्थात नृत्यक (कलाकार) काव्य, साहित्य, इतिहास आदि का ज्ञान प्राप्त कर स्वयंमें एक भाव की स्थापना (Hipotheses) करता है। और उसी भाव को सकल्प में रुपांतरीत करके भावनाओं के माध्यमसे मुद्राओं में परिवर्तीत करता है। नृतक (कलाकार) का यह कार्य असाधारण स्वरुप का है। क्योकी इस कार्य का परिणाम उपस्थित अनेक दर्शकोकी भावनाओंको उनकी सोच, विचार और कार्य को प्रभावित करता है, प्रेरणा देता है। इसी कारण सौंदर्शशास्त्र के दृष्टी से नृत्य एक महत्वपुर्ण अवधारणा है।

नृत्य के अनेक प्रकार है। प्रत्येक प्रकार के नृत्य में एक ना एक भावना होती ही है। किंतू प्रत्येक नृत्य दर्शको को प्रभावित नही करता। यदी करे भी तो वह कार्यान्वीत नही करता। या फिर ऐसा भी कह सकते है कि, वह कार्य प्रेरक नही होता। इसी कारण नृत्य को व्यवस्थित रुप से समजकर, उसको साधना के रुप में देखकर उसे महत्व देना अत्यावश्यक है।

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है की, नृत्य एक ज्ञानात्मक विषय है। जो की मनुष्य को उसके वास्तव स्वरुप का परिचय कराने में सहाय्यक है। यदी नृत्य की इस विशेषता को गंभीरता से देखा जाए तो नृत्य दर्शन का खासकर व्यवहारीक दर्शन (Practical Philosophy) का भी महत्वपुर्ण विषय बन सकता है।

पादटिपण :

1) सौंदर्यशास्त्राची रुपरेषा, पृष्ठ 56.

2) ओशो टाईम्स, जनु 2009, पृष्ठ 64.

3) सौंदर्यशास्त्राची रुपरेषा, पृष्ठ 96.

4) तत्रैव, पृष्ठ 94

5) Role and function of dance: historical context, Dr. Anonna Guha www.Narthki.com

6) ओशो टाईम्स, जुन 2009, पृष्ठ 60

7) www.Narthki.com (Magzin), Wykipedia

संदर्भ सुची :

1) प्रा. एस.व्ही. कुलकर्णी, प्रा.बि.पी. काळे, प्रा.ई.आर. मठवाले, सौंदर्य शास्त्राची रुपरेषा, स्वाती प्रकाशन, पूर्णा 2011

2) अमृत साधना (संपा), ओशो टाईम्स, ओशो मल्टीमीडिया ॲण्ड रिजॉर्टस प्रा.लि.पुणे, जुन 2009

3) www.narthiki.com, Wykipedia

•••

"Again dreaming, you silly, see.
Tell me who are you at present?
Do you have a pleasant minute?
Always in the past or future
You have lost all joys of nature.
Just do not waste your precious time
Even your poems are not in rhyme
If you desire, enjoy your life to the full
Attend to the present
Otherwise you fall"

Ali Arian

Published by :
Dr. Santoshrao Thakare,Principal for Research Centre for Humanities , Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, AMRAVATI.
444 607 (M.S.) INDIA Printed at : Rico resography Machine College Amravati. Cover Page : Vaishnavi Printers,Amravati.